Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

जनसंख्या वृध्धि उसकी शिक्षा एवं पर्यावरणीय परिणाम

डॉ. रेखाबेन ज़ेड.*

पर्यावरण शिक्षा की सार्थॅकता स्वत: स्पष्ट है। यह एक ऐसी शिक्षा है जो मानवको जीने का सलीका सिखाती है। यह वह रास्ता बताती है जो मनुष्य की विकास यात्रा और प्रकृति के पारिसिथ्ति की तंत्र के बीच में संतुलन और समन्वय का मार्ग है। यह आगे की पीढियों को जीवन की गारंटी देती है और प्रकृति के भुगोल तथा मनुष्य के इतिहास के साथ साथ रहना सिखाती है। पर्यावरण शिक्षा की सार्थॅकता को विश्वभर ने स्वीकारा है। पुरा संसार इस बात को लेकर चिंतित है कि भ्यंकर वन विनाश, बे-लगाम प्रदुषण, संसाधनों क अंधाधुंध शोषण, नाभिकीय शस्त्रों की मुर्खतापुर्ण अंधी दौड और औधोगिक उन्नति के नाम पर प्रकृति से अशिष्ट छेडछाड मनुष्य जाति को ही नहीं, सम्पुर्ण जीव-जगत को विनाश के कगार पर खडा कर देगी ।

वर्तमान में जनसंखया-विस्फोट विश्व की सबसे ज्वलंत सम्स्या है। हमारी जो अनेकानेक समस्याएँ जनसंख्या वृध्धि के फलस्वरुप उत्पन्न हुई है उनमें पर्यावरण पर दुष्प्रभाव भी प्रमुख है। मानव जीवन की दृष्टि से पर्यावरण की समस्या वर्तमान में सबसे ज्वलंत समस्या है। इसके भविष्य में और भी गंभीर होने की प्रबल संभावनाएँ हैं। भारत में ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व में, विकसित राष्ट्रो में इसके नियंत्रण हेतु निरंतर कार्य हो रहा है; परंतु जिस अनुपात में, सफलता मिलनी चाहिए, नहीं मिल पाई है। मानव समाज की खुशहाली पर्यावरण की रक्षा पर ही निर्भर है। इस दृष्टि से समय रहते राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर, एक अभियान के रुप में, प्रभावी, संगठित एवं संतुलित कार्यकम बनाकर लागु करने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। इस हेतु आनेवाली पीढी को भी वैज्ञानीक दृष्टि से सोचने के लिए ज्ञान प्रदान करना अनिवार्य बन गया है।

बढती हुइ जन संख्या के कारण छोटे-बडे कस्बे व नगर अनियोजित ढंग से निरंतर बढते ही जा रहे है। इनका प्रकृति के प्रत्येक क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड रहा है। प्रकृति के नियमों की भी अनदेखी करने में हम पीछे नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने व्यक्तिगत हितों एवं स्वार्थो की पूर्ति हेतु अपनी राष्ट्रीय धरोहरप्राकृतिक प्रयावरण को बनाए

---

*डॉ. रेखाबेन ज़ेड. पटेलप्राध्यापक- हिन्दि विभाग,श्री जी. के.&सी. के. बोसमिया कोलेज, जेतपुर

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

रखने के लिए हम पर्याप्त अनुशासित नहीं है। हम प्रकृति के सौंदर्यमय पर्यावरण को हृद्य से प्यार नहीं करते, ऐसा प्रतीत होता है। क्या प्रकृति सबके लिए आवश्यक नहीं है? क्या प्रकृति को हमारे प्यार की ललक नहीं है? जिस प्रकार परिवार के एक बेजुबान सदस्य को प्यार व रख-रखाव की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार पर्यावरण को भी संरक्षण एवं देखभाल के रुप में प्यार चाहिए।

प्राकृतिक पर्यावरण का निर्दयता से विध्वंस किया जा रहा है। इस विध्वंस का परिणाम कालांतर में ठीक वैसा ही सिध्ध होगा, जैसा अपने पैरों पर कुल्हाडी मारने का होता है। आनेवाली पीढियाँ इस स्वार्थमय कृत्य के लिए हमें कभी माफ नहीं करेंगी। आज चाहे हमने संपन्नता का मुखोटा लगा लिया हो, लेकिन बढती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण न करने और पर्यावरण को बर्बाद करने की कालिख हमारे इन मुखौटों पर स्वत: पुत जाएगी। अत: जनसंख्या-नियोजन कार्यक्रम तथा पर्यावरण की रक्षा के लिए जन-जागृति के माध्यम से जनता में इस अभिवृति के विकास की आवश्यकता है। दोनों कार्यक्रमों को सफल बनाना हम भारतीयों के लिए परमावश्यक, पारमार्थिक, पवित्र एवं नैतिक उत्तरदायित्वपुर्ण होने के साथ-साथ संविधान में वर्णित हमारे कर्तव्यों के निर्वाह में भी सहायक है।

जनसंखया-वृध्धि से पर्यावरणीय प्रभाव

- **संसाधनों की रिक्तता**

दोहन के दृष्टि से प्राकृतिक संसाधन कई वर्षो तक अछुते रहे थे। भारत में संपदा व प्राकृतिक साधनों का व्यवस्थित रुप से दोहन इसी शताब्दी में शुरु हुआ है। दोहन की मात्रा में वृध्धि जनसंख्या की वृध्धि के अनुसार हो रही है। द्वितीय विश्वयुध्ध के उपरांत 'आर्थिक-विकास' का युग आरंभ हुआ। प्रतिस्पर्धावश आर्थिक विकास की दौड में आगे निकलने हेतु औधोगीकरण का प्रादुर्भाव हुआ। विकास की इस दौड के क्रम में प्राकृतिक संपदा का जो असंतुलित दोहन शुरु हुआ वह निरंतर चलता ही जा रहा है। औधोगीकरण का अनियंत्रित प्रसार होने से आज पर्यावरणीय समस्या देश के सम्मुख एक चुनौती के रुप में खडी है। उधोगों के लिए कच्चा माल; जैसे लोहा, ताम्बा आदि खनिजों तथा तेल, गैस व कोयले जैसे ऊर्जा स्त्रोतों की खपत जनसंखया-वृध्धि से कहीं अधिक रही है। परीणाम यह है कि संसाधन समाप्त होते जा रहे है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

योजनाओं के माध्यम से औधोगीकरण के चक्र को द्रुत गति प्रदान की। देश को आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से इन योजनाओं को भले ही राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समर्थन मिला हो, परंतु पर्यावरण की दृष्टि से ये योजनाएँ प्रतिगामी ही सिध्ध हुई हैं। औधोगीकरण ने शहरीकरण और जनसंखया-वृध्धि के माध्यम से प्रदुषण को काफी हद तक प्रभावित किया है। जनसंख्या-वृध्धि का द्बाव प्रदुषण से सीधा संबंध रखता है। यह प्रदुषण के जलवायु, अन्नोत्पादकता, मनुष्य के स्वास्थ्य और यहाँ तक कि जीवन को बचाने की क्षमता को भी प्रभावित किए बगैर नहीं रह सकता। वायु-प्रदुषण का मुख्य कारण बढते हुए वाहनों व कल-कारखानों में खपनेवाला ईंधन ही तो है। यह बात नहीं है कि औधोगिक क्षेत्र व उससे प्रदुषित होनेवाली वायु की जानकारी लोगों को नहीं है लेकीन जनसंख्या की जरुरतों की पुर्ति हेतु प्रदुषण उत्पन्न करनेवाले संयंत्रो की स्थापना मजबुरन की जाती है।

- **जलवायु में भारी परिवर्तन**

जलवायु-परिवर्तन मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य को निश्चित रुप से प्रभावित किए बिना नहीं छोडता। जीवन जीने के तौर-तरीके व अनाज-उत्पादन भी इससे प्रभावित हो रहे हैं। वायुमंडल में आवश्यकता से अधिक कार्बन-डाइ-ओक्साइड की मात्रा होने, लकडी के जलाने एवं वायु में अनुपात से अधिक मिट्टि बढने से वर्षा एवं तापमान भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। उन्वेषकों की दृष्टि में इस शताब्दी के आरम्भ से अब तक वायुमंडल में कार्बन-डाइ-ओक्साइड की मात्रा में 10 से 15 प्रतिशत की वृध्धि हुई है। कार्बन मुक्त ईंधन के अपुर्ण दहन से एक रंगहीन, गंधहीन, लेकिन जहरीली गैस 'कार्बन मोनोअक्साइड' निर्मित होती है, जिसका मुख्य स्त्रोत मोटरगाडियों का पेट्रोल ईधन है। वायु में कार्बन-डाइ-ओक्साइड की इस तरह बढती मात्रा से पृथ्वी के औसत तापक्रम में वृध्धि होती है।

शिक्षार्थियों को इतना अवबोध करने के सक्षम बना दिया जाए कि जनसंखया वृध्धि किस प्रकार हमारे देश के लिए सभी क्षेत्रों में हानिकारक सिध्ध हो रही है। इस प्रकार से संस्कारित बच्चे जब भी व्यावहारिक जीवन में प्रविष्ट होंगे, तब अपने हृदय ज्ञान का उपयोजन करते हुए इस सम्सया से उत्पन्न होनेवाली अन्य सभी समस्याओं से वे उबर सकेंगे। इससे केवल वर्तमान भारत ही नहीं, बल्कि भावी भारत भी खुशहाल स्थिति में रह

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

सकेगा। विभिन्न प्रांतों की पाठ्य-पुस्तकों में कई विषयों को एकीकृत करते हुए पर्यावरण अध्ययन करवाने की व्यवस्था की ओर कदम उठाया गया है; लेकिन आवश्यकता इस बात के है कि प्राथमिक स्तर तक के छात्र-छात्रों को इससे अवगत कराया जाए। किशोरवस्था में ही छात्र छात्राओं को अभिवृति के विकास की ओर उन्मुख किया जा सकता है।

- **पर्यावरण शिक्षा**

जिस प्रकार पर्यावरण में संतुलन बनाए रखने व प्रदुषण्नियंत्रण के लिए जनसंख्या वृध्धि पर रोक हेतु अभिवृति विकसित करना वांछित है उसी प्रकार संस्थाओं द्वारा छात्रों को पर्यावरण शिक्षा देना भी जरुरी है। इसके साथ-साथ कुछ और भी बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं का कर्तव्य है कि वे विभिन्न वर्गो के लोगों को औपचारिक रुप से शिक्षित करें और प्रदुषण नियंत्रण के लिए सौर उर्जा, बायो-गैस, निर्धुम चुल्हे, पवनचक्की और उन्नत शवदाह प्रणालि को प्रोत्साहित करने की योजनाएँ बनाकर समाज के सभी वर्गो का सहयोग प्राप्त करें। स्थानीय शिक्षण संस्थाओं द्वारा 'जनसंख्या शिक्षा' एवं 'पर्यावरण शिक्षा' को गति प्रदान की जानी चाहिए, क्योंकि 'स्कूल समाज का छोटा रुप' है। संस्थाओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन और उपयोगी सहायक सामग्री का भी यथासंभव प्रयोग होना चाहिए। जनसंख्या एवं पर्यावरण के संदर्भ में प्राचीन धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं को गर्व के साथ अपनाना चाहिए, क्योंकि हमारी संस्कृति का मूल स्वर ही प्रकृति-वंदन रहा है।

संदर्भ -

(1) पर्यावरण विश्वकोष

- डॉ. श्याम मनोहर व्यास, मैना पब्लिशर्स, नई दिल्ली

(2) पर्यावरण शिक्षा

- हरिश्चंद्र व्यास, विध्या विहार, नई दिल्ली

(3) વિકાસ અને પર્યાવરણનું અર્થશાસ્ત્ર

- સી. જમનાદાસની કંપની, અમદાવાદ- ૩૮૦૦૦૪